भगत सैन - सबद १

धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥

रागु धनासरी, भगत सैण, गुरु ग्रंथ साहिब, ६९५

धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥
वारने जाउ कमला पती ॥१॥
मंगला हरि मंगला ॥
नित मंगलु राजा राम राइ को ॥१॥ रहाउ ॥
ऊतमु दीअरा निर्मल बाती ॥
तुहीं निरंजनु कमला पाती ॥२॥
रामा भगति रामानंदु जानै ॥
पूरन परमानंदु बखानै ॥३॥
मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥
सैणु भणै भजु परमानंदे ॥४॥२॥

सार: सृष्टि ऐसी परोपकारिता को दर्शाती है जो हमारे दैनिक जीवन में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। जैसे सूरज की अविचल गरमाहट जो बिना किसी भेदभाव या रुकावट के, बिना किसी शर्त के जीवन को बनाए रखती है और उसका पालन-पोषण करती है। यह घटना देने की स्वाभाविक भावना को उजागर करती है जहाँ प्रकृति बदले में कुछ भी उम्मीद किए बिना पोषण प्रदान करती है। इस संदर्भ में, सार्वभौमिकता महज़ धारणा से कहीं बढ़कर, विभाजन को सार्थक सहभागिता में रूपांतरित कर देती है। एकता को बढ़ावा देकर, सभी के कल्याण में योगदान करती है और सर्वव्यापकता के विचार को अधिक सामंजस्यपूर्ण सह-जीवन की दिशा में महत्वपूर्ण क़दम के रूप में अपनाती है। ब्रह्मांड के कल्याण से जुड़ना हमें इस प्रवाहित ऊर्जा के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप से तालमेल बिठाने में सक्षम बनाता है जिससे यह हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन जाता है।

धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥

धूप और तेल से जलते दीपक जिन्हें एक थाली में सजाकर दिव्यता की आराधना के लिए अर्पित किया जाता है। यह कृत्य इस बात का प्रतीक है कि दिव्यता वह चेतना है जो सृष्टि के समस्त रूपों में मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में विद्यमान है।

वारने जाउ कमला पती ॥१॥

मैं स्वयं को उस सर्वव्यापी दिव्य चेतना के चरणों में समर्पित करता हूँ। यह उस परम तत्व के प्रति पूर्ण समर्पण को दर्शाता है जो हमारे परस्पर जुड़े हुए अस्तित्व की गहन समृद्धि को उजागर करता है। (१)

मंगला हरि मंगला ॥

एकता और सार्वभौमिक कल्याण के परम आनंद का उत्सव मनाइए। यह प्रकाश डालता है कि सच्ची आराधना केवल कर्मकांडों का पालन करना नहीं बल्कि अपने अंतर्मन में सद्भाव को जागृत करना है।

नित मंगलु राजा राम राइ को ॥१॥ रहाउ ॥

उस सर्वव्यापी चेतना के प्रति अपनी भक्ति के रूप में, निरंतर सार्वभौमिक कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहिए। यह ऐसी सदैव शुभ और सामंजस्यपूर्ण अवस्था का संकेत देता है जो पूजा-आराधना के बाहरी कृत्यों पर निर्भर नहीं होती। (१)(विराम)

ऊतमु दीअरा निर्मल बाती ॥

दीपक की जगमगाती लौ ज्ञान की श्रेष्ठता का प्रतीक है जबकि उसकी बाती साधक की गरिमा को दर्शाती है।

तुहीं निरंजनु कमला पाती ॥२॥

हे सर्वव्यापी दिव्य चेतना, आप ही निष्कलंक और परम पावन हैं। यह अभिस्वीकृति उस अंतरात्मा को प्रतिबिंबित करती है जो सदैव कल्याणकारी भावनाओं से ओत-प्रोत रहती है। (२)

रामा भगति रामानंदु जानै ॥

सर्वव्यापी चेतना का भक्त उसकी आनंदमयी सर्वव्यापकता से परिचित होता है। यह अनुभवात्मक बोध का प्रतीक है, ऐसा प्रबुद्ध जीव जो समस्त सृष्टि की एकता को अनुभव करता है।

पूरन परमानंदु बखानै ॥३॥

संपूर्ण सृष्टि को उसकी पूर्णता में स्वीकार करना परम आनंद की सर्वोच्च अवस्था को अभिव्यक्त करता है। यह उस अंतरात्मा की ओर संकेत करता है जिसने द्वैत-भाव को पार कर लिया है। (३)

मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥

सार्वभौमिक ऊर्जा के आकर्षक और प्रेरक गुण जीवन की चुनौतियों से पार लगाने में सहायक होते हैं। यह दर्शाता है कि आंतरिक भक्ति द्वैत को संतुलन में बदल सकती है और व्यक्ति को समग्रता में शांति प्राप्त करने में सहायता करती है।

सैणु भणै भजु परमानंदे ॥४॥२॥

सैन कहते हैं कि उस परमानंद की सर्वोच्च अवस्था का निरंतर चिंतन करो। यह कोई भौतिक सुख नहीं है, अपितु यह वह आनंद है जो तब उत्पन्न होता है जब अहंकार, भय और विखंडन का भाव, चेतना की सर्वव्यापकता के बोध के समक्ष विलीन हो जाता है। (४)(२)

तत्त्व: भक्त सैन, परम आनंद (परमानंद) नामक उस परम सुख की खोज पर ज़ोर देते हैं जो हमारे वास्तविक मानवीय स्वभाव को दर्शाता है, ऐसी अवस्था जो भय, भेदभाव और अहंकार से पूरी तरह मुक्त है। अपने दैनिक जीवन में हम अक्सर संसार के मोह-माया में उलझकर सुख और दुःख के बीच निरंतर संघर्ष में फँसे रहते हैं। हालाँकि, वास्तविक आनंद की शक्ति हममें से हर किसी के भीतर

ही मौजूद है। इसे आत्म-खोज, सद्गुणों के विकास और ब्रह्मांड के साथ अपने गहरे जुड़ाव को पहचानने की दृढ़ निष्ठा के माध्यम से जागृत किया जा सकता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com